32 PAES ANSIR BOOK

विषय Subject: Hindi

विषय कोड Subject Code: 051

परीक्षा दिनांक Date of Exam: 02/3/2

उत्तर देने का माध्यम Medium of answering paper: Hindi / Englis

प्रश्न पत्र का सैट Set of the Question paper: B

गोला भरने हेतु उदाहरण :-
सही तरीका :-
गलत तरीका :-

नोट :- इस शीट को भरने पूर्व इस पृष्ठ के पीछे दिए उदाहरण को देखें

कार्यालय उपयोग के लिए

INC 613352
SS 01 - HINDI pk 1
Bx 451148

केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		
कु		

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
संदीप कुमार शर्मा परीक्षक क्र. 9670, उ.मा.शि. शास.उ.मा.वि. तनोडिया	M.S. ALAWA V.N. 8758 Go.G.H.S.S. SUSNER

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्र. 1. का उत्तर

(i) दत्ताजी सब के यहाँ

(ii) नाभिक

(iii) शब्दालंकार

(iv) चार कालों में

B (v) कपड़े पहनाती है।

(vi) पैसे की

प्र. 2 का उत्तर

(i) लेखक

(ii) नौ वर्ष की उम्र

(iii) भूषण

(iv) कागज के पन्ने से

(v) बिड़ला मन्दिर

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

क्र.

(vi) सरल वाक्य ।

(vii) मात्रिक छंद ।

प्र. 3. का उत्तर

(क)	(ख)
(i) मस्ती का सन्देश	हरिवंशराय बच्चन
(ii) चौपाई छन्द	16 मात्राएँ
(iii) चित्रकार	चितेरा
(iv) सम्पादकीय पृष्ठ	अखबार की अपनी आवाज
(v) हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग	भक्तिकाल
(vi) छायावाद के प्रवर्तक कवि	जयशंकर प्रसाद

B
S
E

प्र - 4 का उत्तर

(i) ढोलक की आवाज (ढोल) ।

32

कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्र. क्र.

(ii) जयशंकर प्रसाद।

(iii) लाल खड़िया चाक।

(iv) दोहा छंद

(v) मुहावरा

(vi) संवाद और ध्वनि से।

B (vii) सिन्धु-घाटी सभ्यता में अंगूर, खीरा, गेंहू आदि उगाए जाते थे।

प्र. 5 का उत्तर

(i) सत्य।

(ii) सत्य।

(iii) असत्य।

(iv) सत्य।

(v) सत्य।

(vi) असत्य।

MADHYAPRADESH BOARDOFSECONDARYEDUCATION MADHYAPRADESH BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्र. 6 का उत्तर

(अथवा)

→ लक्षणा शब्द शक्ति — वह शब्द शक्ति जिससे शब्द के प्रचलित अर्थ का बोध न होकर उससे संबंधित अन्य अर्थ का बोध हो, वह लक्षणा शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण → (i) शेर वनराज कहलाता है।
(ii) खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।

प्र. 7 का उत्तर

→ तकनीकी शब्द — वह शब्द जो हमे किसी खोजी गई वस्तु निर्मित वस्तु या विचार का बोध कराते है या इनका अर्थ प्रदर्शित करते है, वह सब तकनीकी शब्द कहलाते है।
तकनीकी शब्द अंग्रेजी के technical का हिन्दी पर्याय है, इसका अर्थ प्रयत्न करना होता है।

योग

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्र क्र.

तकनीकी शब्द को प्रायोगिक या पारिभाषिक शब्द भी कहते है।

उदाहरण →
(i) अधिसूचना - Notification.
(ii) पर्यावरण - Environment.
(iii) अधिवक्ता - Advocate.

प्र. [illegible] का उत्तर
(अथवा)

(i) क्या लता गा रही है?

(ii) आदमी का हवा में उडना संभव नहीं है।

प्र. 9 का उत्तर (अथवा)

→ शमशेर बहादुर सिंह 'दूसरा तार सप्तक' के महत्वपूर्ण कवि थे। क्योंकि इनको बिंबधर्मी के नाम से भी जानते है। इन्होने इनकी रचनाओं में जान डाल दी।

प्रश्न क्र.

प्र - 10 का उत्तर

- हम कष्टों को सहते हुए भी खुशी का माहौल पैदा किया जा सकता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए की कि दुख का समय भी निकल जाएगा। यह था हमेशा के लिए नहीं रहने वाला। कुछ समय बाद सुख भी अवश्य आता है। क्योंकि समय चलायमान है। यह हमेशा नहीं रहता है।

प्र - 11 का उत्तर

- जेब के भरे होने और मन के खाली होने पर बाजार नहीं जाना चाहिए। यदि मन खाली हुआ तो यह बाजार की चीजों से आकर्षित होगा और जेब भरे होने पर अनावश्यक वस्तु खरीदने के लिए मोहित होगा। इसलिए मन खाली होने पर बाजार नहीं जाना चाहिए बल्कि मन खाली न होने पर जाना चाहिए। अगर हम बाजार जाते हैं तो हम बाजारूपन को बढ़ावा देते हैं।

प्रश्न क्र.

प्र 12 का उत्तर

→ शिरीष का पेड़ कालजयी अवधूत है। यह वसंत ऋतु से लेकर आषाढ़ के मास तक फूला खिला तथा फूलों से लदा होता है। यह ग्रीष्म की भयंकर गर्मी में भी हरा - भरा रहता है। इसके पुष्पों को शीतपुष्प भी कहा गया है।

प्र 13 का उत्तर

→ लेखक के पिता ने पि आनन्द को पाठशाला भेजने के लिए कई शर्तें रखीं। जैसे ग्यारह बजे पाठशाला जाने से पहले तक उसे खेतों में काम करना होगा तथा पानी देना होगा। और पाठशाला से आने के बाद उसे ढोर चराना होगा। अतः खेतों में जिस दिन ज्यादा काम होगा वह पाठशाला नहीं जा सकता है। इस प्रकार उसने सभी शर्तें को स्वीकार किया और पाठशाला जाना प्रारंभ किया।

प्रश्न क्र.

प्र - 14 का उत्तर

ए और अप्रत्याशित विषयों में अधिकांश 'मैं' शब्द का प्रयोग होता है। यह किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। इससे छात्रों के निम्न गुणों का विकास होता है —

(i) छात्रों में ज्ञान तथा सोचने क्षमता में वृद्धि होती है।

(ii) छात्रों की लेखन शैली में सुधार होता है।

(iii) किसी भी विषय पर लिखने मे नए - नए विचार दिमाग में आति है।

B
S
E

प्र. 15 का उत्तर

(अथवा)

→ संदेह अलंकार → जब किसी काव्य को पढने या सुनने पर निश्चित नही हो पाता की उपमान वास्तव मे उपमेय है या नहीं वहाँ संदेह अलंकार होता है। अर्थात जहाँ उपमेय और उपमान में संशय का भाव बना रहे

प्रश्न क्र.

वहाँ संदेह अलंकार होता है।

उदाहरण -

→ सारी बीच नारी है कि नारी बीच सारी है।
सारी है कि नारी है कि नारी है कि
सारी है ॥

प्र - 18 का उत्तर

भाव विस्तार - जननी और जन्मभूमि हर व्यक्ति के जीवन में बेहद महत्वपूर्ण है। माँ (जननी) जो हमें जन्म देती है तथा हमें जीवन जीना सिख सीखाती है। हमारे हर सुख - दुख को अपना समझती है। माँ अपने बच्चे पर आँच तक नहीं आने देती है। उसी उसकी गोद में स्वर्ग से ज्यादा आनन्द मिलता है। जन्मभूमि जहाँ हम जन्म लेते है उस भूमि से कई भाव जुड़े होते है। उसमें हमारी विविध संस्कृति और इतिहास छिपा होता है। हमारा हृदय उसकी गोद में मंत्रमुग्ध हो जाता है। जन्मभूमि हर

योग पू
...MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH... SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SE CO...

ल क्र.

व्यक्ति के जीवन में विशेष महत्व रखती है। यह दोनों ही स्वर्ग के समान है। अतः इन्हे स्वर्ग से महान् कहने में कोई अतिश्योक्ति नही है।

प्र - 17 का उत्तर

(अथवा)

(1) ~~कक~~ शीर्षक → "हँसना सीखे"।

(2) नीरस जीवन को हास्य-व्यंग्य या हँसना सुखद बना देता है।

(3) सार → मनुष्य जीवन में कष्ट व समस्याए होती है, जिससे वह दुःखी होता है। अतः उसे आनंद तथा सुख के लिए हँसना चाहिए, क्योंकि हास्य व्यंग्य ही मनुष्य जीवन में आनन्द भर सकता है। यह मनुष्य के संघर्ष, तनाव, दुःख कम करता है। अतः मनुष्य को सदा हँसते रहना चाहिए।

B
S
E

प्र. क्र.

प्र-18 का उत्तर

* जीवन परिचय *

" हरिवंशराय बच्चन "

जन्म – सन् 1907 मे (इलाहाबाद).

(i) दो रचनाएँ – निशा निमंत्रण, मधुबाला, मधुशाला, मधुकलश।

(ii) भावपक्ष - कलापक्ष – हरिवंशराय बच्चन एक हालावादी कवि है। हालावाद के साथ-साथ रहस्यवादिता की भावना इनकी रचनाओं मे देखने को मिलती है। इनके काव्य मे प्रेम एवं सौन्दर्य, सामाजिक ~~चेतनाओं~~ चेतनाएँ भी मुखरित है।

इन्होने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय सीधी-सादी भाषा व संवेदनशिक्त गेय शैली मे अपनी बात कही है। इन्होने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। तत्सम युक्त शब्दावली है। प्रांजल व गेय शैली मे बात कही है। इन्होने

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

मक, रूपक, श्लेष, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग किया।

(ii) साहित्य में स्थान → हालावाद के प्रमुख प्रवर्तक हरिवंश राय इन्होंने नीरस और शुष्क विषयों को सही रोचक ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम हैं। ये छायावादोत्तर युग के कवि हैं। इनके जैसे उच्चकोटि और महान कवि सदियों में एक बार होते हैं। हिन्दी साहित्य सदैव आपको याद रखेगा।

FSE

प्र. 19 का उत्तर

* जीवन परिचय *

"फणीश्वर नाथ रेणु"

(i) मुख्य रचनाएँ → मैला आँचल, जुलुस, ठुमरी आदि

(ii) भाषा-शैली → फणीश्वर नाथ रेणु ने आम बोलचाल की साधारण भाषा को अपनाया। इनकी भाषा में तत्सम, तद्भव और साधारण बोलचाल वाले शब्दों का प्रयोग है। ग्रामीण भाषा में प्रयुक्त होने वाले विकृत शब्दों का

प्र. क्र.

प्रयोग भी इन्होंने किया है। इन्होंने गाँव में प्रयोग होने वाले मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है।

रेणु जी ने वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भाषात्मक, भावात्मक, मनोवैज्ञानिक व रिपोर्ताज आदि शैलियों का प्रयोग सुंदर ढंग से किया है।

(iii) साहित्य में स्थान - फणीश्वर नाथ रेणु एक आँचलिक उपन्यासकार के रूप में प्रतिष्ठित रहे। वे श्रेष्ठ कहानीकार, निबंधकार, कथाकार भी है। निम्नवर्ग, शोषितों और दलितों को अपनी साहित्य रचना का विशेष बनाया। उन्होंने लोकगीत, लोकसंस्कृति, लोकोक्ति आदि को नए ढंग से लोगों में प्रस्तुत किया है। हिन्दी साहित्य इनका ऋणी है।

योग

ल क्र.

B S E

प्र-20 का उत्तर

सेवा में,
श्रीमान जिलाधीश महोदय,
देवास (म.प्र.)

दि. 02-03-2023.

विषय - ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबन्ध लगाने हेतु प्रार्थना पत्र।

महोदय,

मैं देवास के राजाराम नगर का रहवासी हूँ तथा कक्षा-12वी में पढ़ता हूँ। आजकल बोर्ड परीक्षा का समय चल रहा है, सभी विद्यार्थी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त है। परन्तु कुछ लोग लाउडस्पीकर का प्रयोग करते है।

जिससे हम ध्यान नही लगा पा रहे है। इन शादियों के माहौल में अत्यधिक ध्वनि से परेशानी होती है। तथा बुजुर्ग लोग भी इससे परेशान है। अतः आपसे निवेदन है कि परीक्षा काल में इन यंत्रों पर प्रतिबंध लगाए।

धन्यवाद

प्रार्थी
रितेक पटेल

माध्यप्रदेश

प्र क्र.

प्र-14 का उत्तर

(i) पर्यावरण की सुरक्षा

रूपरेखा -

1. प्रस्तावना
2. पर्यावरण का महत्व
3. प्रर्यावरण को हानि
4. संरक्षण के उपाय
5. उपसंहार

1. प्रस्तावना → हमारी पृथ्वी एक आवरण से ढकी हुई है। जो हमारी पृथ्वी को सुरक्षित रखता है। एक मात्र पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन संभव है इस आवरण की वजह से। इसकी सुरक्षा हमारा कर्म है।

2. पर्यावरण का महत्व → पूरी पृथ्वी पर चारों तरफ से एक आवरण से घिरी हुई है। यह सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणों (U.V. rays) से हमारी रक्षा करता है। यह पर्यावरण हमारे जीवन का अहम्

हिस्सा है।

3. **पर्यावरण को हानि** → इस युग की अधुनिकरण के कारण हमारा पर्यावरण खत्म हो रहा है। यहाँ ऑक्सीजन की मात्रा घट रही है तथा कार्बन-डाईआक्साइड बढ़ रही है। बढ़ते प्रदूषण से हमारे पर्यावरण को बेहद नुकसान उठाना पड़ रहा है। अतः इसका भुगतान हमें कभी करना होगा। पेड़ों की कटाई भी इसका मुख्य कारण है।

4. **संरक्षण के उपाय** → हमें पर्यावरण को सुरक्षित रखना होगा। अधिक से अधिक पेड़-पौधे लगाने होंगे तथा प्रदूषण को कम करना होगा। लोगों को इसके प्रति जागरूक होना चाहिए। वनों की कटाई को रोकना चाहिए। औद्योगिकरण में कमी करनी चाहिए।

5. **उपसंहार** → हमें हमारी सुरक्षा स्वयं करनी है। पर्यावरण को बचाना हमारा परम कर्तव्य है। जितना हो सके कम-से कम पेड़ों की कटाई होनी चाहिए। अधिक से अधिक प्रकृति का संरक्षण जरूरी है। लोगों को इसके प्रति जागरूक होना चाहिए।

* पृथ्वी हमारी माँ है *

प्रश्न क्र.

प्र - 22. का उत्तर

संकेत → सबसे तेज ---------- झुंड को

संदर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 में संकलित कविता "पतंग" से लिया गया है। इसके रचयिता "आलोक धन्वा" है।

प्रसंग - प्रस्तुत पद में कवि ने प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन तथा बच्चों की खुशी का वर्णन किया है।

व्याख्या → कवि कहता है वर्षा ऋतु के बाद आसमान (नभ) साफ एवं स्वच्छ दिखाई देता है। बादल हट जाते है। तथा सूरज भी खरगोश की आँखों के समान लाल दिखाई देता है। इसके पश्चात शरद ऋतु का आगमन हो जाता है। तथा हवाओं में महक आने लगती है फूलों की खुशबू फैल जाती है। बच्चों में नई उमंग व उत्साह भर जाता है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

यह साइकिल चलाते है तथा इधर-उधर दौड़ लगाते है। बच्चे इस ऋतु में पतंग उड़ाकर आनंद लेते है। तथा दोस्तों के साथ मस्ती करते है।

विशेष → 1. कवि ने प्रकृति का सौन्दर्य दर्शाया है।
2. 'सबसे तेज बौछारें गयीं' व 'सवेरा हुआ' में दृश्य बिम्ब है।
3. जोर-जोर में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
4. भाषा सरल एवं सहज सुंदर है।
5. साहित्यिक खड़ी भाषा का प्रयोग किया है।

प्र-23 का उत्तर

संकेत → एक बार वह ------- चुनौती दे दी

संदर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक आरोह-भाग-2 के गद्य खण्ड में संकलित 'पहलवान की ढोलक' पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता फणीश्वर नाथ रेणु जी है।

प्रसंग → इस पद में लेखक ने पहलवान लुट्टन की कुश्ती तथा कुश्ती के प्रति उसकी मस्ती व लालसा को दर्शाया है।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

प्र क्र.

व्याख्या → जब लुट्टन पहलवान एक बार श्याम नगर मेले में गया तो उसस उसने वहाँ पहलवानों की कुश्ती तथा दाँव पेंच देखे। वह खुद को रोक नहीं सका और मैदान में उतर गया। उसने 'शेर के बच्चे' (चाँदसिंह) कहे जाने वाले एक नामी पहलवान को चुनौती दी। लुट्टन का कोई गुरु नहीं था, उसने ढोल को अपना गुरु माना था। ढोलक (ढोल) पर थाप पड़ते ही उसके शरीर में उत्साह का संचार हो उठता था इसी वजह से उसने बिना सोचे-समझे चाँदसिंह को चुनौती दे दी

विशेष → 1. रेणु जी ने पुराने खेल (कुश्ती) का वर्णन रोचक ढंग से किया है।

2. निर्जीव वस्तु (ढोल) की अनोखी महत्वता का वर्णन किया है।

लुट्टन की जवानी की मस्ती को दर्शाया है।

4. भाषा सरल, सहज एवं सुंदर है।

प्र - 8 का उत्तर

i) मोहन पुस्तक पढ़ रहा है।

ii) जंगल में शेर दहाड़ने लगा।

प्र - 13 का उत्तर (अथवा)

i) हर घर में स्नान घर होता था।

ii) चारों तरफ ~~आँगन~~ कमरे और बीच में आँगन होता था।